आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 6 फरवरी, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

73वें गणतंत्र दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के.गर्ग द्वारा दिये गये उद्‌बोधन के अंश

राजुवास परिवार के समस्त अधिकारीगण, संकाय सदस्य, कर्मचारी बन्धुओं, प्रिय छात्रगण, उपस्थित सभ्रान्त देवियों और सज्जनों एवं प्यारे बच्चो। भारतवर्ष के 73वें गणतन्त्र दिवस की सर्वप्रथम आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आप सब विदित है कि आज ही के दिन वर्ष 1950 से हमारा संविधान लागू हुआ तथा हमारा राष्ट्र एक सार्वभौम राष्ट्र बना। भारत वर्ष के संविधान निर्माताओं को याद कर उनके इतने महत्वपूर्ण योगदान की सराहना करते हुए उन्हें नमन कर श्रद्धांजली का दिवस है। संविधान हमें न केवल अधिकार प्रदान करता है अपितु हमारे कर्त्तव्यों का निर्वहन करने का बोध कराता है। अतः हम सब को अपने–अपने कर्त्तव्यों का बोध भी होना चाहिए ताकि हम राष्ट्र तथा समाज निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें। आज के इस राष्ट्रीय पर्व पर हम सभी को भी कर्तव्य परायण होने की शपथ के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है ताकि हम स्वंय के संस्थान, समाज के एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी सहभागिता निभा सकें। हम जिस भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं उसमें समाज तथा राष्ट्र का विकास निहित होना चाहिए ताकि हम आने वाले पीढ़ियों को एक विकसित, सम्पन्न तथा समृद्ध राष्ट्र सौंप सके। विश्वविद्यालय ने पिछले लगभग छः माह के दौरान कुछ विशेष गतिविधियां व उपलब्धियां हासिल की है जिससे विश्वविद्यालय का लगातार भौगोलिक विस्तार हो रहा है तथा इस अवधि में विश्वविद्यालय में दो नये डेयरी तथा खाद्य प्रौद्योगिकी कॉलेज प्रारम्भ किये गये है तथा इन दोनों महाविद्यालयों के छात्रों के प्रवेश के साथ शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो चुका है, जोधपुर में एक नये पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय के निर्माण का कार्य प्रगति पर है तथा इस वर्ष हम वहाँ प्रवेश ले कर महाविद्यालय प्रारम्भ करना चाहते है। जोबनेर में बस्सी स्थित पशु विज्ञान केन्द्र हेतु 10 बीघा भूमि आंवटन के उपरान्त दिनांक 19.1.2022 को माननीय मंत्री कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य, श्री लालचन्द जी कटारिया द्वारा भूमि पूजन के उपरान्त शिलान्यास किया गया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि जिला नागौर में नावां में राज्य सरकार द्वारा नवीन स्वीकृत पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय के निर्माण हेतु 30 एकड़ भूमि विश्वविद्यालय को निःशुल्क आंवटित होने के पश्चात हमारे द्वारा इसका आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है। भारत सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद का 'जिला ग्रीन चैंपियन पुरस्कार–2021' राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय को प्रदान किया गया। इस अवधि में विश्वविद्यालय द्वारा आर.पी.वी.टी–2021 को सफलतापूर्वक पूर्ण कराया गया। शिक्षकों तथा कर्मचारियों के कल्याण हेतु शिक्षकों के सी.ए.एस. के समस्त प्रकरणों के निस्तारण हेतु एक समिति गठित की गई है। गैर शैक्षणिक रिक्त पड़े पदों पर पदौन्नति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है, बहुत शीघ्र ही इसे पूर्ण कर लिया जायेगा। शिक्षकों के रिक्त पदों पर भर्ती की प्रक्रिया के अन्तर्गत रोस्टर तैयार कर राज्य सरकार को प्रेषित कर दिया गया है। शीघ्र ही गैर शैक्षणिक पदों को भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ की जायेगी। इस अवधि में विश्वविद्यालय के प्रबंध मण्डल, अकादमिक परिषद्, वित्त समिति की बैठकें आयोजित कर आवश्यक निर्णय विश्वविद्यालय हित में लिये गये। विश्वविद्यालय के प्लानिंग बोर्ड तथा पीजी काउसिंल का गठन किया गया। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने इस सत्र की आई.सी.ए.आर. प्री पी.जी. परीक्षा में स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए अखिल भारतीय स्तर पर सफलता प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। विश्वविद्यालय के 48 विद्यार्थियों ने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु प्रवेश लिया है। 59 छात्रों द्वारा आई.सी.ए.आर. द्वारा आयोजित एन.डी.एस. परीक्षा–2021 उत्तीर्ण की गई एवं 8 छात्रों ने आई.सी.ए.आर. द्वारा आयोजित ए. आर.एस.–प्री परीक्षा उत्तीर्ण की। मैं सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ साथ ही आप सभी को इस 73वें गणतन्त्र दिवस की पुनः हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूं। **जय हिन्द, जय भारत**

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर भवन का माननीय पशुपालन मन्त्री एवं गणमान्य अतिथियों द्वारा शिलान्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र जोबनेर का हुआ शिलान्यास

वैज्ञानिक पशुपालन को युवा स्वरोजगार के रूप में अपनाएं: कृषि एवं पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 16 वें पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) का शिलान्यास माननीय कृषि एवं पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया के कर कमलों से कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग की अध्यक्षता में दिनांक 19 जनवरी, 2022 को किया गया। इस अवसर पर कृषि एवं पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया ने कहा कि पशुपालन के क्षेत्र में ऐसी तकनीकें विकसित हो जिससे कि देशी गौवंश व अन्य पशुओं की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो सके तथा युवाओं को इससे प्रेरणा मिले और वे इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सके। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के अर्न्तगत संचालित पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से पशुपालकों को पशुपालन की वैज्ञानिक तकनीकों एवं नवाचारों से अवगत कराया जाता है। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित कर पशुपालकों का कौशल विकास किया जा रहा है। इस नवीन पशु विज्ञान केन्द्र के खुल जाने से इस क्षेत्र के किसानों व पशुपालकों को सीधा लाभ मिल सकेगा जो कि इनके आर्थिक उत्थान में सहायक सिद्ध होगा। गौरतलब है कि राज्य में पशुपालन विकास एवं पशुपालकों के कल्याण को देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री ने वर्ष 2021–22 की बजट घोषणा में जोबनेर में पशु विज्ञान केन्द्र खोलने की घोषणा की थी। शिलान्यास समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता पी.जी.आई.वी.ई.आर, प्रो. संजीता शर्मा, प्रधान शैतान सिंह मेहरड़ा, जिला परिषद् सदस्य पेमाराम सेपट, निदेशक (कार्य) इंजि. पी.एम. मिततल, सरपंच हरि सिंह बूरी, अतिरिक्त निदेशक पशुपालन डॉ. उम्मेदसिंह, विशेषाधिकारी डॉ. ओ.पी. गढ़वाल, प्रगतिशील किसान एवं पशुपालक गंगाराम सेपट, सुरेन्द्र निर्वाणा, डॉ. गोविन्द सहाय गौतम, प्रभारी अधिकारी पशु विज्ञान केन्द्र डॉ. अशोक बेंदा एवं अन्य गणमान्य लोग शामिल हुए। कार्यक्रम के अंत में प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गाढवाला के पशुपालकों ने जाना वैज्ञानिक पशु पालन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा युनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण 19 जनवरी को संपन्न हो गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस प्रशिक्षण में गाढवाला ग्राम के 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिक पशुपालन का आर्थिक महत्व, दुग्ध प्रसंस्करण, पशु प्रजनन, प्रमुख रोग एवं बचाव, आवास प्रबंधन, टीकाकरण, कृमिनाशन, उन्नत पोषण एवं पशुओ का चयन पर विषय विशेषज्ञ प्रो. राहुल सिंह पाल, डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. देवीसिंह, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. मोहन लाल, डॉ. अरूण झीरवाल और डॉ. अमित कुमार द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण के समापन पर सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गए। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में जोधाराम प्रथम, भंवराराम द्वितीय एवं गोकुलराम तृतीय स्थान पर रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने किया।

बैकयार्ड मुर्गी पालन से हो सकती है अतिरिक्त आय

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "लघु कुक्कुट पालन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 जनवरी को संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में बीकानेर जिले के 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रशिक्षण के मुख्य अतिथि, निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच ने कहा कि मुर्गी पालन प्रदेश में तेजी से बढ़ता व्यवसाय है अतः मुर्गी पालक भाई पारम्परिक पशुपालन के साथ–साथ लघु मुर्गी पालन अपनाकर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इन दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान बैकयार्ड मुर्गी पालन का महत्व, मुर्गीपालन हेतु उपयुक्त नस्ले, आवास प्रबंधन, आहार प्रबंधन, अण्डे एवं मांस हेतु मुर्गीपालन, मुर्गीयों के प्रमुख रोग एवं बचाव आदि विषयों पर डॉ. दीपिका गोकलानी, डॉ. अरूण झीरवाल, डॉ. मोहन लाल चौधरी, डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. विजय बिश्नोई, डॉ. गरिमा चौधरी एवं डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये। प्रशिक्षण के समापन पर सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में पवन जाखड़ प्रथम, मगनाथ जाखड़ द्वितीय एवं जेठाराम तृतीय स्थान पर रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डॉ. अरूण कुमार झीरवाल ने किया।

राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

नवजात पशुओं का उचित प्रबंधन सफल पशुपालन का आधार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 12 जनवरी को आयोजित ई–पशुपालक चौपाल में पशुओं के नवजात बच्चों की देखभाल विषय पर विशेषज्ञ डॉ. अशोक कुमार ने पशुपालकों से वार्ता की। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने चौपाल में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजस्थान में पशुपालन पशुपालकों की आजीविका का महत्वपूर्ण आर्थिक आधार है यहां गौवंश के अलावा भैंस, भेंड, बकरी एवं ऊंट पालन मुख्यतः से किया जाता है। ई–चौपाल के विषय को सामायिक बताते हुए उन्होंने कहा कि नवजात पशुओं का उचित प्रबंधन सफल पशुपालन का आधार है तथा पशुपालन की उन्नत तकनीकों को अपनाकर पशुपालक इस व्यवसाय से अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि पशुपालक यदि जन्म से नवजात पशु का उचित प्रबन्धन करें तो आगे चलकर पशु स्वस्थ रहेगा, अधिक उत्पादक एवं प्रजनक बनेगा। आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ. अशोक कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, पशु स्वास्थ्य विभाग, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा ने बताया कि नवजात बछड़ो या मेमनो में मृत्युदर अधिक रहती है जिसका पशुपालकों को नुकसान उठाना पड़ता है। मादा की गर्भावस्था में ही उसकी उचित देखभाल एवं प्रबधन हो तो बच्चे का विकास अच्छा होता है, अतः ग्याभिन पशुओं को उचित पोषण प्रदान करना चाहिए। प्रसव के समय पशु की जर गिरना एवं नवजात बच्चे में नाल सक्रमण को रोकने हेतु विशेष ध्यान रखना चाहिए। नवजात बछडे या मेमनों को उचित मात्रा में एवं सही समय पर खीस या क्लोस्ट्रम जरूर खिलाना चाहिए जो कि पोषण के साथ–साथ बछड़ों में रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करता है एवं विभिन्न बीमारियों से बचाता है। पशुओं में उचित प्रबन्धन हेतु सींगरोधन, बधियाकरण एवं पशु पहचान हेतु टेगिंग जैसे प्रबन्धन तरीकों को भी अपनाना चाहिए। पशुपालक भाई उचित प्रबन्धन, संतुलित आहार, टीकाकरण अपनाकर वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन कर इस व्यवसाय को अधिक लाभदायक बना सकते है।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढवाला में प्रौढ़ साक्षरता जागरूकता रैली का हुआ आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पाँसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में प्रौढ़ साक्षरता जागरूकता रैली का आयोजन वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के सहयोग से 29 जनवरी को किया गया। इस अवसर पर रैली को उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाढ़वाला के प्रधानाचार्य श्रवण चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए बताया कि हम 18 वर्ष से अधिक के निरक्षर युवा, प्रौढ़ एवं बुजुर्गों शिक्षित करके ही शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पाँसिबिलिटी के समन्वयक और राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने कहा कि शिक्षित समाज से ही विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

दुधारू पशुओं को बाह्य परजीवियों से बचाऐं

बाह्य परजीवी वे कीट हैं, जो पशु के शरीर की चमड़ी पर या अंदर या बालों, पंखों पर और ऊन में आश्रय और भोजन प्राप्त करने के लिए निर्भर रहते हैं जैसे मखियाँ, मच्छर, चींचड़, पिस्सू, जूँ, खटमल और धुनीय आदि। इससे ग्रस्त बैल एवं भैंसों में कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है व दुधारू पशुओं में दूध देने की क्षमता कम हो जाती है। ये बाह्य परजीवी दुधारू पशुओ में विभिन्न प्रकार के दुष्प्रभाव उत्पन्न करते है जिससे उनके स्वास्थ्य एवं उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

प्रत्यक्ष प्रभाव :

- ❖ पशुओं में बाह्य परजीवियों के काटे गए स्थान पर खून बहने से अन्य मक्खियाँ अपने अंडे देतीं है जिससे घाव पैदा हो जाता है।
- ❖ बाह्य परजीवियों द्वारा पशु शरीर पर विभिन्न हानिकारक रसायन छोड़े जाते है जिससे उनके शरीर पर खुजली, रक्तसत्राव तथा अन्य हानिकारक प्रतिक्रियाएं होती है।
- ❖ बाह्य परजीवियों द्वारा पशुओं में खून चूसने के कारण खून की कमी हो जाती है जिससे एनीमिया की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- ❖ चिचड़ों द्वारा पशुओं का खून चूसते समय अपनी लार से संवेदनाहीन करने वाले रसायनों का स्त्राव किया जाता है। जिसके कारण पशुओं में लकवा हो सकता है जिसे चिंचड़ी पक्षाघात कहते है।

अप्रत्यक्ष प्रभाव :

- ❖ पशुओं के दुग्ध उत्पादन तथा स्वास्थ्य में भारी गिरावट देखने को मिलती है।
- ❖ बाह्य परजीवी अनेक प्रकार के संक्रामक रोगों के वाहक का कार्य करते है, जैसे एनाप्लजमोसिस, बबेसियोसिस, थैलेरियोसिस, ट्रिपेनोंसोमियोसिस आदि।
- ❖ बाह्य परजीवियों से ग्रसित पशु कमजोर होने से उनकी जनन क्षमता, वृद्धि तथा दुग्ध उत्पादन की क्षमता कम हो जाती है।
- ❖ बाह्य परजीवियों के संक्रमण से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो जाती है।
- ❖ मनुष्य में जूनोटिक बीमारियों के फ़ैलने की संभावना रहती है जिससे जन स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जैसे स्क्रब टाइफस, लिशमानियोसिस, राकी माउटेन स्पोटेड फीवर, लाइम डिजीज आदि।

दुधारू पशुओं में बाह्य परजीवियों से बचाव :

- ❖ पशुशालाओं एवं बाड़े की उचित साफ–सफाई करें तथा एक निश्चित समय अंतराल पर परजीवीनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- ❖ संक्रमित पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।
- ❖ पशुशाला की मिट्टी को समय–समय पर बदलकर वह ब्लीचिंग पाउडर, चूने का पाउडर, लाल दवा आदि का छिड़काव करें।

उपचार :

- ❖ पशुओं की बाहरी सतह पर परजीवी नाशक दवाओं जैसे मेलाथियॉन, डेल्टामेथरिन, साइपरमेथरिन एवं अमित्राज आदि दवाओं को पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ नियमित 3 माह के अंतराल पर आइवरमेकटीन इन्जेक्शन का उपयोग पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार करना चाहिए।

डॉ. देवेन्द्र सिंह, डॉ. अभिषेक चौधरी, डॉ. जयेश व्यास
वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 25, 27, 29 एवं 31 जनवरी एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, दिनांक 12–13, 17–18 एवं 21–22 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत एवं 3–4, 6–7 एवं 10–11 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 315 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 10, 17 एवं 24 जनवरी एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, दिनांक 12–13 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत एवं 6–7 एवं 20–21 जनवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 271 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा आत्मा योजनान्तर्गत दिनांक 3–4 एवं 5–6 जनवरी को दो दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा दिनांक 10–11, 12–13, 17–18 एवं 20–21 जनवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 7, 10, 13, 17, 21, 25 एवं 28 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर एवं 5–6, 11–12 एवं 18–19 जनवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 329 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 13, 14, 17, 19, 21, 22, 27 एवं 29 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 6–7 एवं 10–11 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में कुल 256 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 4, 7, 21, 25 एवं 28 जनवरी को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 12–13 एवं 17–18 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 239 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 6, 10, 19, 24 एवं 25 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 1–2 एवं 17–18 जनवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 191 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 6, 12, 17 एवं 27 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत 3–4, 17–18 एवं 24–25 जनवरी को केन्द्र परिसर में ऑफलाईन आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 177 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 7, 10, 13, 17, 20, 24, 27, 29 एवं 31 जनवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 262 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 10–11, 12–13, 17–18, 20–21 एवं 24–25 जनवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 5, 7, 11, 13 एवं 15 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 17–18, 21–22, 24–25 एवं 28–29 जनवरी को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 244 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 7, 11, 13, 17, 20 एवं 24 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 189 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 5, 12, 15, 19, 21 एवं 28 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 6–7 एवं 10–11 जनवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 261 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 8, 20, 24 एवं 31 जनवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के अन्तर्गत 21–22 एवं 27–28 जनवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 7, 11, 20 एवं 22 जनवरी गांव बाड़ी, नाहरावाली ढाणी, लखासर एवं मलवानी में तथा दिनांक 24–25 एवं 27–29 जनवरी को केन्द्र परिसर में दो एवं तीन दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 188 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में रोग निदान के लिए मूत्र परीक्षण की महत्ता

पशुओं में रोगों के निदान हेतु खून और गोबर की जांच के महत्व के बारे में हमने पिछले अंकों में जाना था। रोगों के निदान के लिए मूत्र की जांच के महत्व के बारे में भी जानना जरूरी है। पशुओं में रोग की स्थिति में उपापचय क्रियाओं में होने वाले परिवर्तन सीधे मूत्र में दिखाई देते है इसलिए मूत्र की जांच करवा कर उसकी मात्रा, रंग, गंध, पारदर्शिता, पी.एच., विशिष्ट गुरूत्व, मूत्र के रासायनिक अवयवों व कोशिकीय अवयवों में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर रोग के कारणों का पता लगाया जा सकता है।

मूत्र की मात्रा– मूत्र की मात्रा में कमी पानी की कमी, किडनी व मूत्राशय के संक्रमण, बुखार, पथरी आदि को दर्शाता है।

रंग– सामान्यतः मूत्र का रंग हल्का पीला होता है। मूत्र का पीला रंग यूरोक्रोम की वजह से होता है। मूत्र के रंग को विशिष्ट गुरूत्व एवं मात्रा को ध्यान में रखकर देखना चाहिये। यदि मूत्र की मात्रा ज्यादा होगी तो वह कम पीला व कम विशिष्ट गुरूत्व वाला होगा। मूत्र का अत्यधिक पीले रंग का होना बुखार को, लाल रंग का होना रूधिर परजीवी संक्रमण को, कॉफी रंग का होना मांसपेशीयों व लाल रूधिर कणिकाओं की क्षति अथवा एजोटूरिया रोग को दर्शाता है।

पारदर्शिता– मूत्र आमतौर पर पारदर्शी होता है। मूत्र में अत्यधिक मात्रा में एपीथीलीयल कोशिकाओं, श्वेत रक्त कणिकाओं, लाल रक्त कणिकाओं, बैक्टिरिया, म्यूकस व क्रिस्टल की उपस्थिति इसे अपारदर्शी बनाते हैं।

गंध– सामान्यतः मूत्र में एरोमेटीक गंध होती है परन्तु मूत्र में उपस्थित यूरिया पर जीवाण्विक क्रिया से इसमें अमोनियकल गंध पैदा हो जाती है। किटोसीस नामक रोग में मूत्र से मीठे फल जैसी गंध आती है।

पी.एच.– सामान्यतः शाकाहारी पशुओं जैसे गाय, भैंस, बकरी आदि में मूत्र क्षारीय व मांसाहारी पशुओं जैसे कुत्ता, बिल्ली आदि में अम्लीय होता है। मूत्राशय में सूजन, जीवाणु संक्रमण व अधिक समय तक पेशाब न लगने की स्थिति में मूत्र की पी.एच. क्षारीय हो जाती है। अत्यधिक प्रोटीन युक्त आहार, भूख, बुखार, डाइबीटीज मेलाइटीस व यूरिमिया रोग में मूत्र का पी.एच. अम्लीय हो जाता है।

विशिष्ट गुरूत्व– यह मूत्र में उपस्थित घुलनशील पदार्थों की मात्रा पर निर्भर करता है एवं यह गुर्दे द्वारा मूत्र को सान्द्र या तनु करने की क्षमता को दर्शाता है। उल्टी, दस्त, शरीर में पानी की कमी, मूत्र में ग्लूकोज व प्रोटीन की उपस्थिति के कारण मूत्र का विशिष्ट गुरूत्व बढ़ जाता है।

मूत्र में अन्य तत्वों की उपस्थिति– मूत्र में नाइट्राइट की उपस्थिति मूत्र मार्ग के जीवाणु संक्रमण को दर्शाता है। मूत्र में प्रोटीन का पाया जाना, गुर्दे, यकृत व हृदय की बीमारी, मूत्र मार्ग के संक्रमण, मूत्र में खून, हीमोग्लोबीन व मायोग्लोबीन की उपस्थिति और अत्यधिक तनाव को दर्शाता है। खून में ग्लूकोज की अधिक मात्रा के कारण मूत्र में ग्लूकोज का पाया जाना डाइबिटीज मेलाइटस, अग्नाशय रोग, बढ़े हुए इन्ट्राकेनीयल प्रेशर, यकृत रोग, यूरिमिया, फड़किया रोग की स्थिति दर्शाता है। खून में ग्लूकोज की मात्रा बढ़े

बिना मूत्र में ग्लूकोज का आना गुर्दों की असामान्य स्थिति को इंगित करता है। किटोसीस नामक रोग में पशुओं के मूत्र में किटोन पाया जाता है। यदि खून में ग्लूकोज की मात्रा कम है और मूत्र में किटोन पाया जाता है तो ऐसी स्थिति भूखमरी, यकृत रोग, अत्यधिक वसा युक्त भोजन व मिल्क फिवर रोग को दर्शाती है। खून में ग्लूकोज की अधिक मात्रा के साथ मूत्र में किटोन की उपस्थिति डाइबीटीज मेलाइटिस रोग को इंगित करती है।

मूत्र में रूधिर कणिकाओं की उपस्थिति – मूत्र में लाल रूधिर कणिकाऐं गुर्दे या मूत्र मार्ग के रोगों, गुर्दे के परजीवी संक्रमण, पथरी, थाइलेरियोसिस, एन्थ्रेक्स, लेप्टोस्पाइरोसीस, केनाइन हिपेटाइटिस, भारी धातु व स्वीट क्लोवर विषाक्तता आदि में पाई जाती है। सामान्य मूत्र में बहुत कम संख्या में श्वेत रक्त कणिकाएं मौजूद होती है। किन्तु अधिक संख्या में श्वेत रक्त कणिकाओं का होना मूत्र मार्ग के संक्रमण को इंगित करता है। मूत्र में हिमोग्लोबीन का पाया जाना लाल रूधिर कोशिकाओं के अपघटन वाले रोगों जैसे– बेसीलरी हीमोग्लोबीनोयूरिया, प्रसव पश्चात हीमोग्लोबीनोयूरिया, लेप्टोस्पाइरोसीस, बबेसियोसिस, हिमोलाइटीक डिसीज ऑफ न्यूबोर्न, भारी धातु, पादप विषाक्तता को दर्शाता है।

मूत्र का नमूना लेते समय ध्यान रखने के बिन्दु

- पशुपालक अपने पशु के मूत्र का नमूना स्वयं एकत्रित कर सकते हैं।
- मूत्र का लेने वाला पात्र साफ होना चाहिए।
- मूत्र सदैव हाथों में दस्ताने पहन कर लेना चाहिए जब पशु मूत्र त्याग कर रहा है तो बीच की धार का नमूना लेना चाहिए।
- यदि संभव हो तो प्रातःकालीन मूत्र का नमूना लेना चाहिए।
- मूत्र के नमूने को यदि प्रयोगशाला में भेजने में समय लगे तो उसे फ्रीज में रख देना चाहिए।

नमूने को विशेष चिन्ह या नम्बर लगाने चाहिए जिससे पता चल सके कि नमूना किस पशु का है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

बकरी पालन : ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का सबसे सशक्त माध्यम

भारत में बकरी पालन गरीब किसानों के लिए अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक लाभदायक है क्योंकि इसके पालन के लिए बहुत अधिक धन, श्रम व संसाधन की आवश्यकता नहीं होती है। ग्रामीण व भूमिहीन किसान बकरी पालन करके अतिरिक्त आमदनी कर सकता है। बकरियां चारे के अलावा जंगली झाड़ियां, पत्तियां इत्यादि बड़े चाव से खाती हैं, तथा ये तापमान की विषम परिस्थितियों में भी अपने आप को ढाल लेती हैं। देश में बकरियों को दूध व मांस उत्पादन के लिए उपयोग में लाया जाता है। बकरियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होने के कारण भी ये अधिक उपयोगी हैं। बकरियां देश की अर्थव्यवस्था में कई तरीके से योगदान कर सकती हैं।

बकरी का दूध : मानव पोषण में इसका योगदान अद्वितीय है। यह मन को प्रसन्न रखता है। बकरी का दूध फेफड़े के घावों व गले की पीड़ा को दूर करता है, यह पेट को शीतलता प्रदान करता है। दूध एक सम्पूर्ण आहार है तथा मानव में ऐसी बीमारियां जिसमें खून में प्लेटलेट्स की संख्या घट जाती है, के लिए बकरी का दूध रामबाण होता है। बकरी का दूध डेंगू के मरीजों के लिए प्राकृतिक उपचार है, इसमें खनिज पदार्थों जैसे आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम पाये जाते हैं एवं यह प्लाज्मा कोलेस्ट्रोल का संतुलन बनाये रखता है। बकरियों के दूध में सिलिनियम अधिक मात्रा में पाया जाता है, जो कि खून का थक्का बनने की क्रिया को भी नियंत्रित करता है। यह एन्टी–ऑक्सीडेन्ट की तरह भी कार्य करता है व टी–कोशिका व इंटरलुकिन की वृद्धि भी प्रभावित करता है। विभिन्न प्रजातियों में बकरी के दूध में छोटे वसा कणों की मात्रा गाय व भैंस के दूध से अधिक होती है, अतः जल्दी पच जाता है। हाइपो ऐलरजिक होने के कारण बकरी का दूध, मानव दूध का विकल्प माना जा सकता है। वीटा–केसीन बकरी के दूध के केसीन का मुख्य घटक है, जिसके कारण ही बकरी के दूध से ऐलर्जी कम होती है तथा शारीरिक विकास में अधिक मदद मिलती है। बकरी के दूध में विटामिन की मात्रा गाय के दूध से अधिक होती है। बकरी के दूध में पोटेशियम 1900 मि.ग्रा/ली. होता है जो कि गाय व भैंस के दूध से अधिक होता है। बकरी के दूध में कैल्शियम व आयरन (550 मिग्रा./कि.ग्रा.) की उपलब्धता गाय के दूध से अधिक होती है। इन खनिज लवणों का कार्य हमारे शरीर की हड्डियों के निर्माण एवं उनको मजबूती प्रदान करना होता है। बकरी के दूध में लैक्टोज की मात्रा गाय या भैंस के दूध से अधिक होती है। जिन मनुष्यों को गाय के दूध से एलर्जी होती है उनके लिए बकरी का दूध लाभदायक होता है क्योंकि यह आसानी से पच जाता है, जो दिल व कैंसर के रोगियों के लिए लाभदायक होता है। बकरी के दूध का पाचन मनुष्यों में अधिक आसानी से होता है तथा इसमें पाये जाने वाले घटक आसानी से उपलब्ध होते हैं। बकरी के दूध में केसीन प्रोटीन के कारण दही नरम बनता है। वसा के ग्लोव्यूल का आकार छोटा तथा एगलुटीनीन नहीं पाया जाता है तथा मध्यम व छोटे चेन के फैटी ऐसिड पाये जाते हैं, जिसके कारण बकरी का दूध गाय व भैंस के दूध से अधिक सुपाच्य होता है। साथ ही बकरी के दूध में औषधीय गुण अत्यधिक पाये जाते हैं क्योंकि बकरी जंगल में चरने के दौरान विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों की पत्तियों आदि का सेवन करती है, जिसकी वजह से अधिक औषधीय गुण आ जाते हैं। यह दूध एक सम्पूर्ण आहार है तथा मानव में ऐसी बीमारियां, जिनमें खून में प्लेटलेट्स की संख्या घट जाती है, के उपचार के लिए रामबाण होता है। बकरी का दूध डेंगू के मरीजों के लिए प्राकृतिक उपचार है।

बकरी के दूध से बनाये जाने वाले व्यंजन : पनीर, चीज, योगहर्ट, घी, खोआ, श्रीखण्ड, छेना, सन्देश, रसगुल्ला, दही, आईसक्रीम व दूध पाउडर इत्यादि दूध से बनाये जा सकते हैं। बकरी का दूध बच्चों को पिलाने के लिहाज से बहुत उपयोगी होता है। भारत के मेट्रो शहरों में बकरी के दूध एवं पनीर की भरपूर मांग है बकरी के पनीर का बाजार सालाना २० प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। इस पनीर का उपयोग तीन सितारा और पांच सितारा होटलों में विभिन्न व्यंजनों में किया जा रहा है।

बकरी का मांस : बकरी का मांस उपभोक्ताओं के बीच प्रथम वरीयता में है, क्योंकि अन्य पशुओं की तरह बकरियों के मांस के साथ कोई धार्मिक मान्यता नहीं जुड़ी है। अधिक मांग तथा कम उत्पादन के कारण बकरी का मांस महंगा मिलता है। इसके मांस को चिवान कहते हैं और यह बहुत ही चिवान में वसा की मात्रा 3–6 प्रतिशत व फास्फोरस 10.65 मि.ग्रा./ग्राम व अच्छे वसा की मात्रा लगभग 70 प्रतिशत तक पायी जाती है, जो कि हृदय व मोटे लोगों के लिए लाभदायक होता है। कोलेस्ट्रोल की मात्रा भी अन्य की अपेक्षा कम पायी जाती है, जो कि स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। बधिया बकरे के मांस में वसा की मात्रा अधिक होती है। चिवान से वे सभी उत्पाद बनाये जा सकते हैं जो कि सूअर, भैंस, मुर्गी, भेड़ के मांस से बनते हैं। प्राकृतिक रूप से कम सुगन्धित होने के कारण विभिन्न प्रकार के उत्पादों को मिलाकर स्वादिष्ट उत्पाद बना सकते हैं जैसे कि बकरी के मांस की बरी, अचार, सोसेज, नगेट्स, कोफ्ता, समोसा, टिक्की, सर्व मॉस करी और चेट्टीनाड बकरी मांस करी इत्यादि।

बकरी से प्राप्त उत्पादों का प्रयोग : बकरी पालन न केवल जीते–जी बल्कि मरने के बाद भी उपयोगी सिद्ध हो रहा है। हड्डियों का चूरा बनाकर पशु दाने में डालने से पशुआहार संतुलित होता है और कैल्शियम एवं फॉस्फोरस की कमी नहीं हो पाती। सींगों से बटन, कंघी, वाद्य यंत्रों के मूढ़ इत्यादि बनाये जा सकते हैं। बकरी के चमड़े का उपयोग ढोलक, तबला, ढ़पली, पर्स, जैकेट बेल्ट बनाने इत्यादि में होता है। बकरी पालन से करोड़ों की आमदनी होती है, पशु ग्रंथियों से प्राप्त जीवनदायी औषधियों की विभिन्न किस्में बनाई जा रही हैं। हार्मोंस को रासायनिक संश्लेषण से तैयार नहीं किया जा सकता है, अतः बकरियों से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। बूचड़खानों से बकरियों के विभिन्न अंगों, उपोत्पाद को इकट्ठा करके निम्नलिखित औषधियां प्राप्त की जा सकती हैं।

ऊन की प्राप्ति : बकरियों की विभिन्न प्रजातियों जैसे पश्मीना, चेगू, चंगथान्गी जो कि पर्वतीय क्षेत्रों में पायी जाती हैं से अच्छी प्रकार की ऊन प्राप्त की जा सकती है। पश्मीना बकरी से सर्वोत्तम प्रकार की ऊन प्राप्त की जाती है, और यह बहुत ही गर्म व बहुमूल्य होती है। कई बकरियों की प्रजातियों में बड़े–बड़े बाल पाये जाते हैं, उनके बालों का उपयोग कालीन, चटाई व दरी बनाने में किया जाता है।

खाद की प्राप्ति : बकरी के गोबर का खाद् के रूप में अधिक उपयोग किया जाता है। बकरियां चरते समय बंजर भूमि को भी वहां पर लेड़ी करके उपजाऊ बना सकती हैं। सारांश में, बकरी को भविष्य का पशु कहा जा सकता है क्योंकि इसका दूध अत्यधिक फायदेमंद होता है, साथ ही मांस उत्पादन में कोई धार्मिक समस्या सामने नहीं आती है। कम लागत से अधिक उत्पादन की संभावना बनी रहती है। बकरी पालन से विश्व के हर व्यक्ति को कम लागत में दूध व मांस को पहुंचाया जा सकता है एवं विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जा सकती है। बकरी, भविष्य में न केवल भारत में बल्कि विश्व में पशुपालन उद्योग की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन जाएगी, जिसके लिए बकरी के अनुसंधान कार्यों में तेजी लाने की आवश्यकता है।

प्रो. (डॉ.) बसंत बैस
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	–	–	–	बारां, जयपुर, झालावाड़, उदयपुर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–		बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, पाली, उदयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर	अलवर, झुंझूनू, उदयपुर	धौलपुर, श्रीगंगानगर	बारां, भरतपुर, दौसा, डूंगरपुर, करौली, कोटा, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाई माधोपुर, सीकर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अजमेर, भरतपुर, बूंदी, दौसा, सवाई–माधोपुर	करौली	–	–
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	जैसलमेर	–	–	अजमेर, बॉसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालौर, झुंझूनू, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सीकर, टोंक, उदयपुर
माता रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ	–	–	–
थीलेरिओसिस	गाय के बछड़े	–	–	–	अजमेर, भरतपुर, चित्तौडगढ़, डूंगरपुर, राजसमन्द, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें - प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए राकेश ने पशुपालन को बनाया आजीविका का जरिया

राकेश बिश्नोई पुत्र श्री रामकुमार, गांव सरदारपुरा लाढ़ान जिला श्रीगंगानगर का निवासी है। राकेश बताते है कि उन्होनें बी.ए. तक की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद नौकरी की तलाश में समय खराब करने की बजाय घर की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाएं रखने के लिए उन्होनें कोई व्यवसाय शुरू करने का मानस बनाया। राकेश को पशुपालन के व्यवसाय में आर्थिक मुनाफा दिखा। शिक्षा के साथ–साथ लोगों के सम्पर्क के कारण उन्हें पशु विज्ञान केन्द्र, सुरतगढ़ के वैज्ञानिकों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तथा पशुपालन पर वैज्ञानिकों से संवाद कर डेयरी फॉर्म लगाने का निश्चिय किया। पशु विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में डेयरी फार्मिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करके अपनी घरेलू देशी गायों को संवर्द्धन करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों के मार्ग–दर्शन से उन्नत नस्ल सुधार के लिए पशुओं में टीकाकरण करवाना प्रारम्भ कर दिया। देखते–देखते समय रहते 3 साल में उन्होनें साहीवाल गाय की उन्नत नस्ल तैयार कर ली एवं भैंसो में भी टीकाकरण करवाकर उनसे उन्नत नस्ल तैयार की गई। राकेश के डेयरी फॉर्म पर लगभग 50–60 पशु है जिसमें 30 गायें व 25 भैंसे है, जिनसे लगभग प्रतिदिन 2 क्विंटल दूध का उत्पादन ले रहे है। राकेश प्रजनन के लिए साण्ड भी तैयार करते है। राकेश अपने गांव के नवयुवकों को अपने डेयरी फार्म पर नस्ल सुधार के लिए प्रेरित करते है। राकेश बताते है कि दुग्ध उत्पादन एवं पशुओं से प्राप्त बच्चे बेचकर प्रति वर्ष लगभग 10.00 लाख रू. की आमदनी हो जाती है। राकेश समय–समय पर पशुओं में कृमिनाशक दवाईयां एवं टीकाकरण करवाते है ताकि पशु बीमारियों से बचे रहे इसके साथ ही समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से सलाह भी लेते रहते है तथा अन्य युवकों को भी केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते रहते है। राकेश की इस कामयाबी के चलते गांव के बेरोजगार युवाओं को स्वःरोजगार की ओर बढ़ा रहें हैं।

सम्पर्क- राकेश बिश्नोई, गांव-सरदारपुरा लाढ़ान (श्रीगंगानगर)(मो. 7232810001)

निदेशक की कलम से...

समेकित खेती व पशुपालन : समय की मांग

कृषि व पशुपालन प्रदेश की अर्थव्यवस्था की मेरूदण्ड है तथा यह क्षेत्र प्रमुख रोजगार प्रदाता क्षेत्र भी है। सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। देश की 60 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका हेतु पशुपालन व कृषि पर निर्भर है। भारत में प्रति हैक्टर उत्पादन का स्तर बहुत न्यून है, कृषि व पशुपालन के विकास के लिए नयी तकनीक, मशीनरी तथा नव–विकसित बीजों, पशुओं की उत्तम नस्लों को अपनाकर यदि कृषि व पशुपालन किया जाये तो हम विश्व के प्रमुख देशों में स्थान हासिल कर सकते हैं। भारतीय कृषि मौसम आधारित है तथा वर्ष के अधिकांश समय अकाल की स्थिति रहती है। अतः इन परिस्थितियों में समेकित कृषि पद्धति से खेती अपनाकर किसान व पशुपालक भाई इस अनिश्चितता की स्थिति से बच सकते हैं। समेकित कृषि पद्धति में फसल उत्पादन के साथ–साथ अन्य सह व्यवसाय जैसे डेयरी व्यवसाय, कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन, बकरी पालन, मछली पालन, खरगोस पालन, सब्जियों की खेती, फलों की खेती, मशरूम उत्पादन, कम्पोस्ट उत्पादन आदि को अपनाकर किसान अधिक आय अर्जित कर सकते हैं। इसी प्रकार वैश्विक प्रतिस्पर्धा में टिकने के लिए कृषि एवं पशुपालन को लाभकारी व्यवसाय बनाने तथा उत्पादन लागत में कमी लाने में समेकित कृषि पद्धति सहायक है। इस प्रणाली में एक घटक दूसरे घटक की आवश्यकता को पूरा करता है, जिससे बहुत ही कम लागत में वर्षभर उत्पादकता बढ़ती रहती है तथा इस प्रकार व्यवसाय करने से वर्षभर निंरतर रूप से आय भी प्राप्त होती रहती है। सह बहुउद्देशीय खेती या समेकित खेती आज के आधुनिक कृषि एवं पशुपालन की मांग है। बदलते परिवेश में लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उचित प्रबंधन एवं चरणबद्ध तरीके से कृषि व पशुपालन किया जाये तो निश्चित ही बहुत लाभकारी है। अतः पशुपालकों व किसानों को कृषि, डेयरी पालन, बकरी पालन, भेड़पालन, मधुमक्खी पालन, रेशमकीट पालन, खरगोश पालन आदि व्यवसाय समेकित रूप से करके अधिक आय अर्जित कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया